भारतीय साहित्य में
कृष्ण

डॉ. प्रणव शास्त्री

353

भारतीय साहित्य में कृष्ण

डॉ. प्रणव शास्त्री

354

देशभारती प्रकाशन
दिल्ली-110093

ISBN : 978-93-81488-57-7

प्रकाशक : **देशभारती प्रकाशन**
सी-585, गली नं. 7, अशोक नगर,
निकट रेलवे फाटक, शाहदरा,
दिल्ली-110093
दूरभाष : 9870425842

© : लेखक

प्रथम संस्करण : 2019
मूल्य : ₹ 750/-
आवरण : अमित कुमार
शब्द-संयोजन : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली-110094
मुद्रक : विशाल कौशिक प्रिंटर्स, दिल्ली-110093

Bhartiya Sahitya Mein Krishna
By Dr. Pranav Shastri

शब्द-भोग

ब्रज में सर्वत्र कृष्णानुरागी राधे–राधे कहकर कृष्णप्रिया को रिझाने का प्रयास करते हैं। हम भी यह भाव रखें, तो कैसा रहे?

राधे मेरी स्वामिनी, मैं राधे तेरौ दास।
जन्म–जन्म मोहि दीजियो, श्री वृन्दावन वास।।

सच कहूँ, ब्रजवास और ब्रजरज बिना राधारानी की कृपा के संभव ही नहीं है। लाड़िली जी अनुकंपा करती हैं तब ही यह जीव वृन्दावन आ पाता है। कृष्ण की कृपा और राधारानी का दुलार इस लोक में बड़ा दुर्लभ है। इस अन्तरराष्ट्रीय शोध–संगोष्ठी की कल्पना, मूर्तरूप तथा सुखद परिणति राधाकृष्ण के प्रेम का प्रसाद ही तो है। उन्होंने ही प्रेरणा प्रदान की। उन्होंने ही योजना बनायी। वे ही इसे पूर्ण कर रहे हैं। **त्वदीयं वस्तु गोविन्द, तुभ्यमेव समर्पयेत्।** हे नाथ! हम सब इस ग्रन्थ के रूप में आपको अपना 'शब्द–भोग' अर्पित कर रहे हैं। स्वीकार कर उपकृत कीजिए। जब संगोष्ठी की रचना बनी, तब सहचर भी मिलते चले गए। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, उ.प्र. भाषा संस्थान, संस्कार भारती, अखिल भारतीय साहित्य परिषद, विश्व हिन्दी मंच, आचार्य पं. नरोत्तमलाल सेवा संस्थान, अन्तरराष्ट्रीय साहित्य कला मंच, इस्कॉन, रस भारती संस्थान, वृन्दावन शोध संस्थान ने अकादमिक, आर्थिक संबल देकर इस योजना को सफल बनाया। सभी शोधपत्र लेखकों ने समय पर उत्कृष्ट प्रपत्र भेजकर इस भोग को तैयार करने में सहायता की, उनके प्रति आभार। इस ग्रन्थ में जो प्रीतिकर लगा, वह सहृदय मित्रों का है। कुछ न्यूनताएँ भी रह गयी हैं, वह मेरी अल्पज्ञता है। इसमें सारा प्रयास कृष्ण प्रेमियों का है; मैंने तो केवल तुलसीदल डालकर कृष्णार्पण किया है।

राधे–राधे।

10 अक्टूबर, 2019 — **डॉ. प्रणव शास्त्री**
वृन्दावन — संपादक

12. भारतीय वाङ्मय में श्रीराधा 63
श्रद्धा सिंह
13. प्राचीन भारतीय वाङ्मय में श्रीकृष्ण का स्वरूप-विकास 66
हिमांशु शेखर सिंह
14. मन्नू भण्डारी के साहित्य में स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज में नारी की स्थिति 69
डॉ. श्रद्धा हिरकने
रंजू मिश्रा
15. रास लीला का सामाजिक पक्ष 74
डॉ. पूर्णिमा आर
16. शिक्षा, साहित्य और प्रकृति 77
डॉ. अरुण कुमार चतुर्वेदी
17. बांगला के आदि कवि चंडीदास एवं उनका 'श्री कृष्ण कीर्त्तन' 83
मुकेश यादव
18. भक्तिकाल के परवर्ती कवि और कृष्ण भक्ति काव्य धारा 85
डॉ. वनिता वाजपेयी
19. भोजपुरी लोकगीतों के कृष्ण 88
श्रीमती मीरा मुंडा
20. आधुनिक गीत में लोक तत्व 92
डॉ. सुमिता सिंह
21. साहित्य द्वारा पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता, पर्यावरण संरक्षण की समस्या एवं संरक्षण के उपाय 98
डॉ. राजेश कुमार
22. हिन्दी साहित्य में पर्यावरण 102
श्रीमती मीतू वरसैंया
23. साहित्य और प्रकृति (भारतेन्दु युगीन काव्य में प्रकृति प्रेम) 104
डॉ. निशा गोयल
24. भारतीय धर्म ग्रंथों में मानवाधिकार 107
डॉ. श्रीमती दुर्गा वाजपेयी
डॉ. श्रीमती शारदा दुबे
25. साहित्य में मानवाधिकार और प्रकृति 111
डॉ. रेखा शर्मा
26. रसखान के काव्य में संगीतात्मकता एवं चित्रात्मकता 116
श्रीमती स्मृति कन्नौजे
27. मलयालम कहानियों में स्त्री रचनाकारों का परिदृश्य 122
डॉ. सीमा चन्द्रन
28. मध्यकाल में स्त्री-मुक्ति का सशक्त स्वर : मीरां की कविता 127
डॉ. नवीन नन्दवाना
29. रामकाव्य में भारतीय संस्कृति 134
सुमन रानी
30. अष्टछापीय कवि परमानन्ददास के काव्य में वात्सल्य वर्णन 141
डॉ. सुषमा पाल
31. समाज और संस्कृति में रामकाव्य की भूमिका 145
डॉ. नरेश कुमार सिहाग
32. सूर का वात्सल्य वर्णन : हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि 149
डॉ. अनिल कुमार विश्वकर्मा
संजय कुमार यादव
33. 'प्रियप्रवास' महाकाव्य में नायक-नायिका : एक प्रयोग 154
चरनजीत कौर
34. आधुनिक कृष्ण काव्य के अल्पचर्चित नारी-पात्र 159
डॉ. अर्चना आर्य
35. हरियाणा में रचित कृष्ण-काव्य की सामान्य प्रवृत्तियाँ 164
डॉ. विजय कुमार वेदालंकार
36. कृष्ण-लीला का अनुधावन 169
डॉ. राजेश चन्द्र पाण्डेय
37. मानवाधिकार: संदर्भ एवं स्वरूप 173
डॉ. (श्रीमती) आरती पाण्डेय
38. गुरुमुखी लिपि में रचित पंजाब का कृष्ण काव्य 179
डॉ. सुनीता शर्मा
39. सोभित कर नवनीत लिए 184
डॉ. माधुरी पाण्डेय गर्ग
40. भारतीय साहित्य में 'राधा-कृष्ण' 187
डॉ. संजीव कुमार

356

दोनों राक्षसियाँ अट्टहास कर उठती हैं। वे कहती हैं कि राम ने कम से कम सीता के स्तन को तो नहीं काटा। स्त्री और प्रकृति पर सत्ताधारी पुरुष वर्ग का अत्याचार निरंतर चल रहा है, इसका लेखिका कट्टर विरोध करती हैं। "वनदुर्गा" नामक कहानी में बलात्कार की शिकार हुई बालिका का नाम दुर्गा जानकर लेखिका चकित हो जाती है। अत्याचारी पुरुषों से निरंतर लड़कर अपने अधिकारों को प्राप्त करने का आह्वान सारा जोसफ अपनी कहानियों में करती हैं।

ग्रेसी

ग्रेसी भी मलयालम की सख्त स्त्रीवादी लेखिका हैं। उनकी कहानियों में बलात्कार की शिकार होती नारियों, दाम्पत्य जीवन की शिथिलताओं और नारी आत्महत्याओं का मर्मस्पर्शी चित्रण हुआ है। इन कहानियों के जरिए वे सामाजिक चेतना को जगाने का प्रयास करती हैं। "गुड़िया" शीर्षक उनकी कहानी बहुचर्चित है। इसमें गुडिया की शौकीन बारह वर्षीय लड़की है जिसे जिन्दा गुडिया देने का प्रलोभन देकर पडोसी क्रिकेट खिलाड़ी युवक उसका फायदा उठाता है। ग्रेसी जी वर्तमान काल में बालिकाओं के साथ होने वाले शोषण को ही कहानी के माध्यम से व्यक्त करना चाहती है।

चन्द्रमती

स्त्री लेखन से सरोकार रखनेवाली समस्त स्त्रियाँ चन्द्रमती की कहानियों का हिस्सा हैं। विशिष्ट व्यंग्य उनके कहानियों की मुख–मुद्रा है। देवीग्रामं, स्टेनडीयर, आर्यावर्तनमं आदि उनके कहानी संकलन हैं।

उपर्युक्त लेखिकाओं के अलावा युवापीढ़ी की अशिता, प्रिया, के.पी. सुधीरा जैसी लेखिकाएँ भी स्त्रीपक्ष को लेकर लिखनेवाली मलयालम की कहानी स्रोत का समृद्ध अंश हैं। निष्कर्षतः मलयालम महिला लेखन ने कहानियों में स्त्री पक्ष को उभारने स्त्री की छवि की पहचान कराने, उसके अस्तित्व व अस्मिता को उबारने का अद्भुत योगदान दिया है और दे रही हैं।

मध्यकाल में स्त्री–मुक्ति का सशक्त स्वर : मीरां की कविता

डॉ. नवीन नन्दवाना
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
(राजस्थान) 313001
nandwana.nk@gmail.com

'भक्ति द्रविड़े ऊपजी, लाये रामानंद।' रामानंद ने इस भक्ति को उत्तर भारत में प्रतिष्ठापित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। उनकी प्रेरणा से इस आंदोलन ने देशभर में अपनी पहचान बनाई। उत्तर भारत की बात की जाए तो कबीर, दादू, नानक, रैदास, सुंदरदास, तुलसीदास, नाभादास, अग्रदास, सूरदास व अन्य कृष्ण भक्ति संप्रदाय के कवियों भक्ति की अविरल धारा को प्रवाहित किया। इस दौर में कुछ कृष्ण भक्त कवि ऐसे भी हुए जिन्होंने किसी पंथ, परम्परा और संप्रदाय की साधना पद्धति को अपनाए बिना, अपने तरीके से ईश्वर के चरणों में अपनी वंदना के पुष्प अर्पित किए। ऐसे संत–भक्तों में हम मीरां और रसखान का नाम प्रमुखता से ले सकते हैं।

इन मध्यकालीन संत–भक्तों ने केवल ईश्वर की आराधना तक ही अपने मन सीमित रखा हो ऐसा नहीं है। इन्होंने तत्कालीन समाज की विषम परिस्थितियों को भी बड़ी निकटता से देखा था अतः इन्होंने ईश्वर की आराधना के साथ–साथ समसामयिक परिस्थितियों से प्रभावित होकर तत्कालीन समाज व्यवस्था की जर्जर रूढ़ियों को भी खत्म करने के लिए अलख जगाई।

मरु मंदाकिनी मीरां को भी हम इन्हीं अर्थों में एक सच्ची संत–भक्त के रूप में देखते हैं। मध्यकाल में राजस्थान में भक्ति की अलख जगाने के साथ–साथ समाज सुधार और स्त्री चेतना जगाने के के कारण मीरां का योगदान अविस्मरणीय रहेगा। आज नारी विमर्श की बात एक लंबे समय के बाद उठी है। मीरां ने तो यह कार्य सदियों पहले की कर लिया था। मीरां ने मध्यकाल में प्रतिरोध का स्वर मुखरित किया था। वह कृष्ण प्रेम में इतनी मगन